International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-04-2019; Accepted: 19-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 30-32

भक्ति की विविध धाराओं का संगमः मीरा का काव्य

डॉ0 अमरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर अमिटी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति युग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय जीवन पद्धति एवं चिन्तन परम्परा पर हमारे देश की आध्यात्मिकता का प्रभाव परिलक्षित होता है। भारतीय आध्यातिमक चेतना ने भारत ही नहीं वरन् समग्र विश्व को प्रभावित किया है। भारतीय भक्ति चेतना और दर्शन के आलोक में पुष्पित पल्लवित भारतीय भक्ति चेतना का प्रभाव हमारे समाज पर व्यापक रूप से पड़ा और सम्पूर्ण भारत में भक्ति की अजस्र धारा प्रभावित होने लगी। भारतीय भक्ति परम्परा मनुष्य की चिन्तन की परिस्थिति, क्षेत्र, जीवन स्थितियों और लोगों की आस्था के अनुरूप विविधता धर्मी होती गयी, इसी कारण भारत में भक्ति के अनेकानेक रूप देखने को मिलता है।

भक्ति एवं आध्यात्म की चेतना का प्रसार भारतीयों के जीवन में वैदिक युग से ही देखने को मिलता रहा है जीवन–जगत के वास्तविकताओं के अनुसार भक्ति का स्वरूप भी बदलता रहा है। भक्ति के संदर्भ में 'नारदमुनि' ने विचार करते हुए लिखा है कि ईश्वर या अपने आराध्य के प्रति परम अनुरक्ति ही भक्ति है शाण्डिल्य ने भी परम प्रेम रूप को भक्ति माना है। अपने आराध्य या इष्ट देव के प्रति अनन्य भाव ही भक्ति का मूल है। हमारे देश में भक्ति के अनेक दर्शन देखने को मिलते हैं। अद्वैतवाद, द्वैतवाद, शुद्धद्वैतवार और विशिष्ट दैतवाद। इन दर्शनों का भक्ति मार्ग दो स्थूल रूप में दृष्टिगत होता है–

निर्गुण काव्य परम्परा
सगुण काव्य परम्परा

उपरोक्त वर्णित दोनों साधना पद्धतियॉ वैदिक काल से लेकर आज तक किसी ना किसी रूप में दृष्टिगत होतीरहीं है। हिन्दी साहित्य एवं हिन्दी जीवन के उदय के साथ–साथ ही हिन्दी क्षेत्र में भक्ति का उदय देखने को मिलता है भक्ति का प्रच्छन्न प्रवाह तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी में हिन्दी जनमानस में देखने को मिलता है। इस प्रच्छन्न प्रवाह में भगवत् भक्ति के अनेक रूप और अनेक सम्प्रदाय देखने को मिलते हैं आदि इस प्रच्छन्न प्रवाह ने समाज के सभी वर्गों एवं क्षेत्रों को अपने प्रभाव क्षेत्र में ले लिया। इस युग में भक्ति का मार्ग समाज के किसी एक वर्ग के लिए ही नहीं वरन् समाज के सभी वर्गों के लिए सुलभ था। इसी कारण भक्ति का प्रवाह लोक जीवन में व्यापक रूप से दृष्टिगत होता गया।

भक्ति एवं धर्म भारतीय जीवन परम्परा का मेरूदण्ड है। सगुण एवं निर्गुण परम्परा के कवियों एवं सन्तो ने भक्ति के प्रचार प्रसार में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया। हमारे समाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हमारे यहॉ सभी धर्मों एवं साधना पद्धतियों के प्रति उदारता का भाव रहा है। जिसके परिणम स्वरूप हमारी परम्परा ने नाना प्रकार की साधनाओं को स्वीकार किया और उसे अपने उनुरूप बनाकर उसका भारतीय जनमानस में प्रचार –प्रसार किया। सगुण और निर्गुण परम्परा के कवियों ने अपने आराध्य के साधना के लिए जो भी साधन अपनाये, वह अपने आप में श्रेष्ठ हैं।

निर्गुण काव्य–धारा के सन्तों एवं कवियों ने अपने आराध्य के गुणातीत रूप का वर्णन किया और भक्ति को समाज के सभी वर्गों के लोगों के निमित्त सुलभ किया। निर्गुण काव्य धारा के सन्तों ने जहॉ एक और सनातन भक्ति परम्परा के अवयवें के स्थान दिया, वहीं दूसरी ओर सूफीयों के प्रभाव को भी ग्रहण किया। साधना का श्रेष्ठ और सहज मार्ग निर्गुणमार्गी कवियों ने आम जनमानस के लिए खोला और उस पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित भी किया।

सगुण काव्य–परम्परा और भक्ति के प्रचारक कवियों ने अपने आराध्य के रूप एवं गुण का विस्तृत वर्णन किया। इस परम्परा के कवियों ने अपने आराध्य की न केवल भक्ति की, वरन् उनके लोक रंजक रूप एवं लीलाओं का भी गान किया। उपने आराध्य की लीलाओं और लोकरंजक रूप का चित्रण सर्वाधिक कृष्ण भक्त कवियों ने किया। कृष्ण भक्ति की एक सुदीर्घ परम्परा हमारे सनातन धर्म में देखने को मिलती है।

कृष्ण काव्य धारा का प्रवाह हिन्दी साहित्य में विद्यापति के काव्य लेखन से आरम्भ होकर आधुनिक काव्य में द्विवेदी युग तक अनवरत रूप से प्रवाहित होता रहा है। उसके बाद भी कमोवेश कृष्ण के चरित्र को केन्द्र में रखकर अनेक प्रबन्ध एवं खण्ड काव्य लिखे गये। श्रीमद्भगवत और महाभारत को अपना आजीव्य बनाकर अनेक भक्त कवियों ने कृष्ण के रूप माधुर्य का वर्णन अनन्य भाव से किया है। कृष्ण के प्रति परम अनुरक्ति प्राचीन काल से प्रवाहित होती रही है। जयदेव इस परम्परा के आदि एवं प्रेम या श्रृंगार लीलाओं का जो वर्णन भक्ति काल में कृष्ण भक्तों ने किया, उसमें जीवन का उल्लास, उमंग एवं समर्पण का भाव देखने को मिलता है।

कृष्ण काव्य धारा को शीर्ष पर ले जाने का कार्य पुष्टि मार्गी कवियों ने किया। ये कवि पूर्णतः कृष्ण की कृपा पर निर्भर थे। कृष्ण इनके आराध्य, सखा, प्रेमी, एवं सर्वस्व थे। इन कवियों में प्रमुख कवि हैं– बल्लभाचार्य, सूरदास, कृष्णदास, कुम्भनदास, गोविन्द स्वामी, नन्ददास, छीतस्वामी, चतुर्भजदास। इसके अलावा कृष्ण भक्त कवियों ने अलग–अलग सम्प्रदायों के माध्यम से भी कृष्ण की लीलाओं का गायन किया– निम्बार्क सम्प्रदाय, राधा बल्लभ सम्प्रदाय हरिदासी सम्प्रदाय (सखी–सम्प्रदाय) चैतन्य (गौड़ीय सम्प्रदाय) इत्यादि। कृष्ण भक्ति परम्परा में कुछ ऐसे भी कति हैं जिन्होंने सम्प्रदाय निरपेक्ष होकर अपनी काव्य रचना की। इन्होंने स्वतन्त्र भाव से अपने आराध्य की लीलाओं का वर्णन किया। इनमें मीराबाई और रसखान प्रमुख रहे हैं।

कृष्ण काव्य परम्परा में कृष्ण के प्रति सम्पूर्ण समर्पण भाव मीराबाई की भक्ति एवं व्यक्तित्व में देखने को मिलता है। मीराबाई भारतीय भक्ति परम्परा की अकेली ऐसी भक्त कवि हैं जिन्होने अपने व्यक्तित्व को किसी एक वाद में बधने नहीं दिया। कीरा की भक्ति में सगुण एवं निर्गुण दोनों की श्रेष्ठ परम्पराओं का समुच्चय देखने को मिलता है। मीरा सगुणोपासक वैष्णव भक्त हैं और उनकी अवतारवाद में आस्था है। भक्तिशास्त्र के आचायों ने जि भक्तिसूत्रों का प्रणयन अपने ग्रन्थों में किया है, वे सीाी सूत्र मीरा

की भक्ति में स्वतः ही समाहित हो गये। महर्षि शाण्डिल्य के अनसार अपने आराध्य में अनन्य अनुराग या अनन्य प्रेम भक्ति है। यही बात महर्षि नारद भी कहते हैं। मीरा अपने आराध्य कृष्ण मे अनन्य रूप से अनसक्त है। कृष्ण अनके लिए गिरधर गोपाल, माखनचोर, सखा एवं प्रेमी हैं। मीरा प्रेम की विहवलता एवं भक्ति की अनन्यता से अभीभूत होकर कहती हैं– 'मेरे ता गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।'

भक्ति शास्त्र का दर्शन कोई भी हो मीरा की अनुरक्ति और प्रेमाभक्ति उसे अपने आप में अनस्भूत कर लेती हैं। मीरा की अनुसक्त और अनन्यता का भा इतना उदाक्त है कि मीरा को अपने प्रभु गिरधरनागर के अतिरिक्त कुछ अच्छा नहीं लगता। वैष्णव भक्तों और दक्षिण के आलवार भक्तों की तरह मीरा ने भी अपने जीवन में भक्ति का सर्वोपरि स्थान दिया है। उनकी मान्यता है कि इस संसार में प्रभु आराधना और उनका स्मरण ही जीवन का सार है–

गोविन्द को सरनु
ब्रया दुख धन माल की ला है, हम ही कहा करनुं।
सॉवरी सूरति चितवन में धरनु।।

जग की आस वास सब तज दी, लाभ होओ चाहे हानी
तेरी सुरत मन मानी।

मना रे गिरधर का गुण गाय
मनसा वाचा करमना रै धणी सौं ध्यान लगाए।

मीराबाई सॉवली सूरत वाले अपने गिरधर को अपने चित में ऐसे धारण किये हुए हैं कि उन्हें कृष्ण के अलावा कुछ सुझंता ही नहीं है। मन, वचन और कर्म से वे कृष्ण को अपने अन्दर समाहित किये हुए हैं, या स्वंय मीराबाई अपने आराध्य में रम गयीं हैं।

भक्ति मं अपने आराध्य के प्रति अनन्यता का भाव प्रमुख है, अपने अनन्य एवं विहवल भक्ति के कारण भक्त अपने आराध्य को अनेकों नामों से पुकारता हैं। मीराबाई का व्यक्तित्व इसका अपवाद नहीं है। यों तो मीरा अपने आराध्य को गिरधर गोपाल या गिरधर नागर कहती हैं, लेकिन भक्ति की विहवलाता में वे अपने आराध्य को – गोविन्द, श्री कृष्ण, गोपाल, हरि, राम आदि नामों से भी पुकारती हैं। यह नाम महात्म मध्ययुग के सभी भक्तों में प्राप्त होता हैं इस सन्दर्भ में आचार्य हजारी प्रसार द्विवेदी ने लिखा है कि –

"मध्ययुग के भक्तों में भगवान ने नाम को महात्म्य बहुत अधिक है। मध्ययुग की समस्त धर्म साधना को 'नाम की साधना' कहा जा सकता है। चाहे सगुण मार्ग के भक्त हों चाहे निर्गुण मार्ग के, नाम जप के बारे में किसी को संदेह नहीं। इस अपार भवसागर मे मात्र नाम ही नौका रूप है।"(मध्यकालीन धर्मसाधना)

नाम की महिमा भक्ति काल की सर्वमान्य विशेष्ता है। मीरा ने भी अपने गिरधर नागर को अनेकों नाम से पुकारा है और उनका स्मरण किया है। वह अपनी वाणी से कहती है–

रसना तूं राम विना मब बोल,
और बोल्यां अपराध लगत है, पड़त भजन मॉ है झोल।

श्रीकृष्ण राम के अवतार माने जाते हैं। यहॉ राम सम्बोधन से श्री कृष्ण की ओर संकेत है। मीरा ने अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति हेतु अनेक शब्दों का सहारा लिया है। किन्तु संकेत गिरधर नागर की ओर है। कितना सारगर्भित आत्मनिवेदन मीने ने अपनी वाणी से किया है– हे वाणी तू प्रभु के अतिरिक्त कुछ और न बोल क्योंकि तेरा ऐसा न करने से मेरी भक्ति में विघ्न उत्पन्न होता है। अनेकानेक नामों से अपने आराध्य का स्मरण सगुण एवं निर्गुण परम्परा के कवियों में भी देखने को मिलता है। चाहे वो कबीर हों या सूर और तुलसीदास। इसी कारण मीरा की भक्ति में विराट समन्यवय एवं सामंजस्य देखने को मिलता है। भाषा भक्ति और आध्यात्म तीनों स्तरों पर मीराबाई ने सामंजस्य स्थापित किया है।

मीरा की भक्ति औन उनका समर्पण अपने आप में उच्च कोटि का है। वह अपने आराध्य के आराधन में इतनी दत्तचित हो जाती है कि उन्हें किसी का ध्या नही नहीं रहता। यहॉ तक कि वह अपनी सुधबुध भी खो देती हैं। यहीं कारण है ि कवह राजबधु और राजकन्या की अपनी स्थिति भूलकर 'पग घुॅघरू बॉध' नाच उठती हैं।

प्रेम और भक्ति के परम स्थिति में प्रेम या भक्त आत्मविलगन की स्थिति में आ जाता है। भक्त अपनी व्यक्ति इयता को भूकर अपने आराध्य में विलीन हो जाता है। मीराबाई प्रेम एवं भक्ति की इस परम स्थिति को प्राप्त कर अपने भक्ति के श्रेष्ठ एवं उच्चादर्श स्थापित करती हैं। मीरा ने केवल कृष्ण को अपना आराध्य माना हे और जीवन पर्यन्त उसी गिरधर की एक निष्ठ भक्ति करती रहती हैंः–

नहीं पूजा देवी देवता। नही पूजा गणगौर, मारो परम स्नेही गोविन्दा। थे मत जाणें और रा।
तुम बिना काऊ दूजो देवा सुपने हूॅ ना हेरी।

मीरा ने यह भली प्रकार आत्मसात कर लिया था कि भक्तिमार्ग बहुत कठिन है, किन्तु वह उस दुर्गम पथ पर निरन्तर बढ़ती रही। परिवाद परिस्थिति, समाज एवं परिवेश के प्रतिकूल होने के बाद भी मीरा की भक्ति निरन्तर प्रवाहित होती रही और विरोधों को दरकिनार करते हुए मीरा भक्ति पथ पर अग्रसर होती गयीं। मीरा ने अपने आप को प्रभु चरणों में अर्पित कर दिया है।

बलि जाऊॅ चरणां की दासी।।
माही केरे गेगा, याही मेरे जमना,याही तीरथ कासी।।
ळरि जी मेराम्है हरि जी की जगत करॉ क्यूॅ हासी।।

मीरा की भक्ति गिरधर गोपाल के सलोनी मूर्ति से आरम्भ होकर उनके निराकार एवं विराट व्यक्तित्व को चित्रित करता है। उपरोक्त पद में मीरा ने अपने आम को गिरधर के चरणों में समर्पित कर दिया है। जिस प्रकार रैदास कहते हैं– 'जो मन चंगा, कठवत में गंगा' वही भाव मीरा की भक्ति में भी देखने को मिलता है। मीरा के लिए अपने आराध्य की शरणगति ही गंगा, यमुना और काशी है। उनके लिए किसी अन्य तीर्थ की आकांक्षा है ही नहीं। गिरधर गोपाल ही उनके लिए जगत का पर्याय हैं।

मीरा की भक्ति में एक ओर सगुण का रूप माधुग्र है तो दूसरी ओर उनमें निर्गुण सन्तों का सत्संग, फक्कड़पन एवं वैराग्य के साथ–साथ सूफ़ीयों का प्रेमादर्श भी है। मीराबाई को कृष्ण भक्ति की प्रेरणा सत्संग से ही मिली लेकिन परिस्थितियों के प्रभाव ने मीरा की भक्ति को बहुआयामी बना दिया। मीरा ने श्रीमद्भागवत का श्रवण मनन अनेकानेक बार किया। इसके साथ ही उनके एकनिष्ठ प्रेम एवं भक्ति का उदय होता है। एक राजबधु के यह भक्ति और साधना आसान ही था, लेकिन मीरा ने भक्ति एवं साधना का कठिन मार्ग चुना। शिरोमणि इस कवियित्री ने लोक जीवन के व्यापक क्षेत्र को अपनी काव्य रचना के लिए अपनाया ओर इसी जीवन में उनकी भक्ति एवं प्रेम का रूप निखरा। मीरा की भक्ति में अनन्यता,स्तुति, सत्संग, वैराग्य, कीर्तन, स्मरण, पाद–सेवन, अर्चन, रास्य भाव, सख्यभाव, वन्दना, आत्मनिवेदन देखने को मिलती है।

मीरा गिरधर गोपाल की अननय भक्त है, लेकिन उनकी भक्ति को किसी एक खॉचे में नहीं रखा जा सकता है। मीरा का प्रेम एवं उनकी भक्ति लोक जीवन में फलती–फूलती है, इसी कारण शास्त्र या आध्यात्म के किसी एक दर्शन या सिद्धान्त में उनके

व्यक्तित्व को समेटा नहीं जा सकता। मीरा ने अपने जीवन काल में अनेकों स्थानों में प्रवास किया– राजस्थान, ब्रजप्रदेश और द्वारका। इसका भी प्रभाव देखने को मिलता है। मीरा का काव्य एवं उनके अन्दर निवास करने वाला भक्त भारतीय विविध साधना पद्धतियों का समन्वय करता है। लोक एवं सत्संग प्रसूत भक्ति में विराट मिश्रण दृष्टिगत होता है।

मीराबाई
- दर्शन (अद्वैतवाद, द्वैतवाद, विशिष्टद्वैतावाद, शुद्धाद्वैतवाद)
- भक्ति पद्धति (सगुण और निगुण का यथास्थान समन्वय)
- भाषा (ब्रजी, राजस्थानी, मेवाती)

भारतीय इतिहास एवं परम्परा में भक्ति का विशेष महत्व है। भक्ति के माध्यम से हमारे सन्तों एवं भक्तों के सामाजिक समरसता एवं आध्यामिक उत्थान के लिए हमारे जनमानस को प्रेरित किया। भक्ताों एवं सन्तों की एक सुदीर्घ परम्परा हमारे देश में रही है, नाना प्रकार की साधना पद्धतियों हमारे देश में प्रचलित रही हैं। समय –समय पर हमारे देश में ऐसे सन्त एवं समाज सुधारक भी हुए, जिन्होने विविध साधना–पद्धतियों एवं धार्मिक रीतियों में सम्न्वय स्थापित किया। इसी परम्परा में भक्त शिरोमणि मीराबाई का भी ना आता है।

मीराबाई की भक्ति एवं व्यक्तित्व विविध धाराओं का समन्वय स्थल है। शैव, वैष्णव, और शाक्त का समन्वय के अतिरिक्त दर्शन के सभी मतों का संगम मीरा की भक्ति में देखने को मिलता है। मीरा की भक्ति सलील सरिता के समान निरन्तर प्रवाहित होती रही है। जिसमें भक्ति की अन्य धाराओं और दर्शनों का यथावश्यक समय–समय संगम देखने को मिलता है। भक्त शिरोमणि मीरा ने अपने काव्य में भक्ति का व्यापक एवं उदाक्त रूप प्रस्तुत किया है।

सन्दर्भ सूचि

1. हिन्दी साहित्य का इतिहासः बच्चन सिंह
2. हिन्दी साहित्य का इतिहासः डा0 नगेन्द्र
3. मीरा ग्रन्थावलीः प्रो0 कल्याण सिंह शेखावत
4. मध्यकालीन धर्मसाधनाः हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिन्दी साहित्यः उद्भवं एवं विकासः हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. मीरा, सहजोबाई और दयाबाईः वियोगी हरि